सना सुहानी

विमला गुगलानी 'गुग'

सप्तऋषि पब्लिकेशन, चण्डीगढ़

इसी कलम से :-

उपलब्धियां- अब तक दस पुस्तकें प्रकाशित

- स्मृतियों के आर - पार (विभाजन के दुःख और सामाजिक कुरीतियों पर आधारित पारिवारिक पुस्तक)
- इंद्रधनुषी जीवन कला(निंबध- सग्रंह)
- उत्सव है जिंदगी(निंबध- सग्रंह)
- मन कस्तूरी(निंबध- सग्रहं)
- सन्नी- बन्नी(बाल काव्य सग्रंह)
- रंगला जंगल (पंजाबी में पशु- पक्षियों पर आधारित कविताएँ) चंडीगढ़ साहित्य अकादमी की और से **2019** में इस बाल काव्य सग्रंह के लिए अनुदान राशि प्रदान की गई।
- अमर स्मृतियां(पाकिस्तान से विस्थापित मेरे परिवार की सात पीढ़ियों के संघर्ष और श्रंद्धाजली की सच्ची दास्ताँ)
- मन- दर्पण- कहानी सग्रंह
- शब्दों के साए- कविता सग्रंह
- हिंदी और पंजाबीं में लगभग पच्चीस सांझा काव्य, कहानी संग्रह प्रकाशित, विभिन्न अखबारों, मैगजीनों में लेख, कविताएँ, कहानियाँ, सुझाव, रेसिपीज़ छप चुकी है, रेडियो, दूरदर्शन पर प्रोग्राम देने का सौभाग्य और कई संस्थानों से सम्मानित।

Sana Suhani

by

Vimla Guglani 'Gug'
Kothi No. 3200, Sector 40-D,
Chanidgarh
Mobile: 9888973200
E-mail: vimlaguglani@gmail.com

ISBN:
978-81-969228-4-9

Edition 2024

© Author

चंडीगढ़ साहित्य अकादमी के अनुदान से प्रकाशित

"यह किताब 'सना-सुहानी' चंडीगढ़ साहित्य अकादमी के सहयोग से

प्रकाशित की गई है"

Published by
Saptrishi Publication
Plot No.25/6, Industrial Area, Phase-2,
Near Tribune Chowk, Chandigarh.
E-mail: sapatrishi94@gmail.com
94638-36591,77174-65715
All rights reserved. No part of this book maybe reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the Author.
Visitusat:www.saptrishipublication.com
Printed at Saptrishi Printers

समर्पण

समर्पित है मेरा यह बाल काव्य सग्रहं
मेरी प्यारी पोती सना गुगलानी को
जिसकी बाल सुलभ क्रियाओं ने
मुझे बच्चों की कविताएं लिखने के लिए
प्रेरित किया
और सभी बच्चों को
जो देश का सुनहरा भविष्य है।

अनुक्रमिका

❖	मेरी और से	6
1.	मेरा अध्यापक	7
2.	बेचारी चिड़िया	9
3.	मेरी साईकिल	11
4.	मच्छर मिंया	12
5.	सना सुहानी	14
6.	गुब्बारे वाला	16
7.	नानी- दादी	17
8.	मधु मक्खिंया	19
9.	मछलियां	21
10.	झूले वाली मुनमुन	23
11.	मोर	25
12.	नीली - पीली तितली	26
13.	नया जमाना	28
14.	मुनिया की फ्राक	29
15.	बरखा रानी	31
16.	पानी की प्यास	32
17.	आम ही आम	34
18.	गर्मी	36
19.	चंदा मामा	38
20.	नया साल	40
21.	अखबार	42
22.	दादा- दादी	43
23.	ठंड	45
24.	मदारी	47
25.	चूड़ीवाला	49
26.	कांय-कायं कौआ	51
27.	तिरंगा	53

मेरी और से

यह मेरा तीसरा बाल काव्य सग्रहं है। पहला हिंदी में ‘ सन्नी- बन्नी’ और दूसरा पंजाबी में ‘ रंगला जंगल’। बच्चों की बालसुलभ हरकतों को देखकर जैसे मन बच्चा ही बन जाता है। वो चीजें जो बड़ों के लिए बिल्कुल मायने नहीं रखती , बच्चों के लिए दुनिया की सबसे बड़ी दौलत समान है। जैसे कि इस सग्रहं में एक कविता है’ मुनिया की फ्राक’ एक बार मैनें एक चार पांच साल की बच्ची को नई फ्राक पहन कर इस प्रकार इठलाते हुआ देखा कि जैसे दुनिया की सबसे कीमती चीज़ उसके पास हो। ‘मधुमक्खिया’ कविता बच्चों की शैतानियों पर है। इसी प्रकार ‘गुब्बारे वाला’ और ‘झूले वाली मुनमुन’ ‘सना- सुहानी’ में मनोरंजन के साथ साथ संदेश भी है। जहां एक कविता में अध्यापकों और तिंरगे के प्रति सम्मान की भावना है तो दूसरी और दादी- दादा, नानी - नाना जैसे रिशतों की अहमियत दर्शाने की एक छोटी सी कोशिश है, जो कि आज के युग में बहुत जरूरी है।

डिजिटल युग के चलते आज के बच्चें किताबों से दूर होते जा रहे है, जो कि सही नहीं है। किताबों की जगह कोई नहीं ले सकता। बचपन की बातें दिमाग पर अमिट छाप छोड़ती है। रंग बिरगी मछलियों को तैरते, मोर को नाचते, छोटी छोटी बच्चियों का रंगबिरगी चूड़ियों से मोह और इसी प्रकार अन्य कविताओं के माध्यम से बच्चों के मन को शब्दों में पिरोने की मेरी यह कोशिश बच्चों के साथ साथ बड़ों को भी पंसद आएगी।

विमला गुगलानी (एम. ए. बी. एड)

सेवामुक्त पंजाब सरकार अध्यापिका

कोठी नं- 3200

सैक्टर- 40डी चंडीगढ़

9888973200

मेरा अध्यापक

कच्ची इटों से जो ताज बनाए,
वो होता है अध्यापक।
अनाड़ी परिंदों को बाज सा उड़ना सिखाए,
वो होता है शिक्षक।
कोई चाहे तो चांद पे बना ले आशिंया,
मासूम, कोमल हाथों को सजा दे कलम से
कोई जादूगर नहीं , वो होता है टीचर

अंधेरी थी राहें मेरी,
बन ज्ञाण का दीपक वो आए।
मेरी नन्हीं आंखों में ,
लौ बन वो जगमगाए।
कभी डांट कर कभी प्यार से,
दिल की कोरी स्लेट पर,
मेरे उजज्वल भविष्य के लिए
बने वो रोशनाई(स्याही)
विद्या का धन देकर मुझको,
भविष्य मेरा सजाया।

सही गलत का फर्क बताकर,

चलना मुझे सिखाया।

मन की पीड़ा हर ली उसने,

निडरता, विशवास जगाया।

बंधन न कोई भय रहा अब,

सिर उठा कर चलना सिखाया।

दिल बच्चों का कोरा कागज,

अक्षर गुरू बनाते

ज्ञाण, मेहनत का पाठ पढ़ा कर

हाथों में कलम थमाते

बेचारी चिड़िया

बरसों बाद दिखी आले में,
नन्हीं सी इक चिड़िया रानी।
देख के उसको उछला मोनू,
कहीं छुपी थी तूं दीवानी।
कहां कहां नहीं ढूढा तुझको,
छत, आगंन चौबारे में ।
पर तूं कहीं भी नजर न आती,
बाग, बगीचे नाहरे में।
दाना पानी मोनू लाया,
चिडिया को फिर यूं सहलाया।

चिड़िया रानी हुई रूआंसी,
जैसे बरसों की हो प्यासी।
बन कर मोनू की हमजोली,
धीरे से कुछ ऐसे बोली।
मानव ने क्या किया कमाल,
फैला है तारों का जाल।
अंदर अंदर घुटती जाती,

सांस भी मैं तो ले न पाती।

जब से नेट मोबाईल आया,

अदृशय सा इक कहर है छाया।

सांसे लेनी हुई है दूभर,

कहां बनाए हम अपना घर।

उंची इमारतों का ताना बाना,

पक्षियों का नहीं ठौर ठिकाना।

कोई न सुनता मेरी कहानी,

कहां रहे अब चिड़िया रानी

मेरी साईकिल

देखो देखो मेरी साईकिल,
रंग रंगीली, छैल छबीली।
सरपट सरपट भागती जाती,
ये तो किसी के हाथ न आती।
चुन्नू मुन्नू सब आ जाओ,
मेरे पीछे दौड़ लगाओ।
सबसे तेज जो भागेगा,
कैरियर पर वो बैठेगा।

छोटे टिंकू तुम आ जाओ,
डंडे पर तुम जगह बनाओ।
टिंग टिंग घंटी बज जाती,
मीठी सी ये तान सुनाती।
पानी तेल की इसे न चाह,
देख भाल की देखे राह।
प्रदूषण न इससे फैले,
लाईसेंस के नहीं झमेले।
सेहत की है ये रखवाली,
साईकल मेरी है निराली

मच्छर मिंया

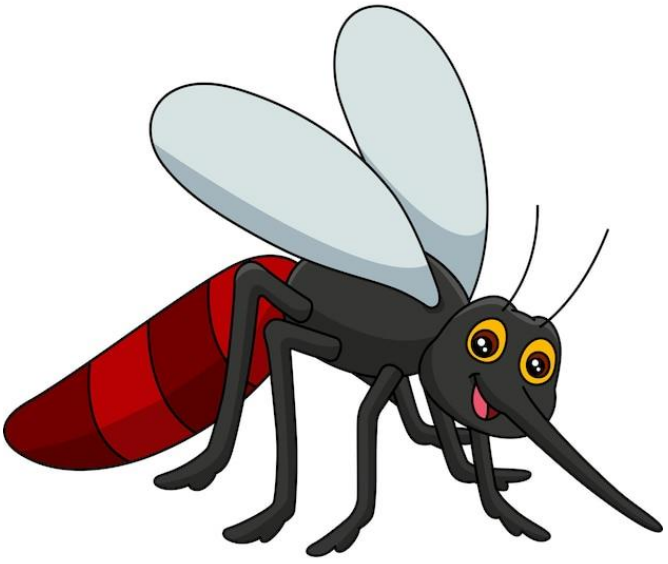

गुनगुन गुनगुन कान में बोले,
यहां वहां वो फिरता डोले।
नीचे उपर , उपर नीचे,
गीत सुनाए हौले हौले।
हाथ में सुई सा चुभ जाए,
पैर में वो खुजली ले आए।
चाहे कितनी कोशिश कर लो,
वो न किसी के हाथ में आए।

मुन्ने के वो गाल पे चिपका,
मौसी के माथे पर काटा।
रूनझुन की गरदन पर बैठा,
खुद को लगा बैठी वो चांटा।
बच्चों इसका नाम है मच्छर,
इसके डंक में छुपा है शस्त्र।
ठहरा पानी इसे है भाता,
वहीं पे अपना घर ये बनाता।
गल्ली मोहल्ला या फिर क्यारी,

साफ रहे हर इक फुलवारी।

मलेरिया, डेंगू पास न फटके,

मच्छरों से गर रहेगें बचके।

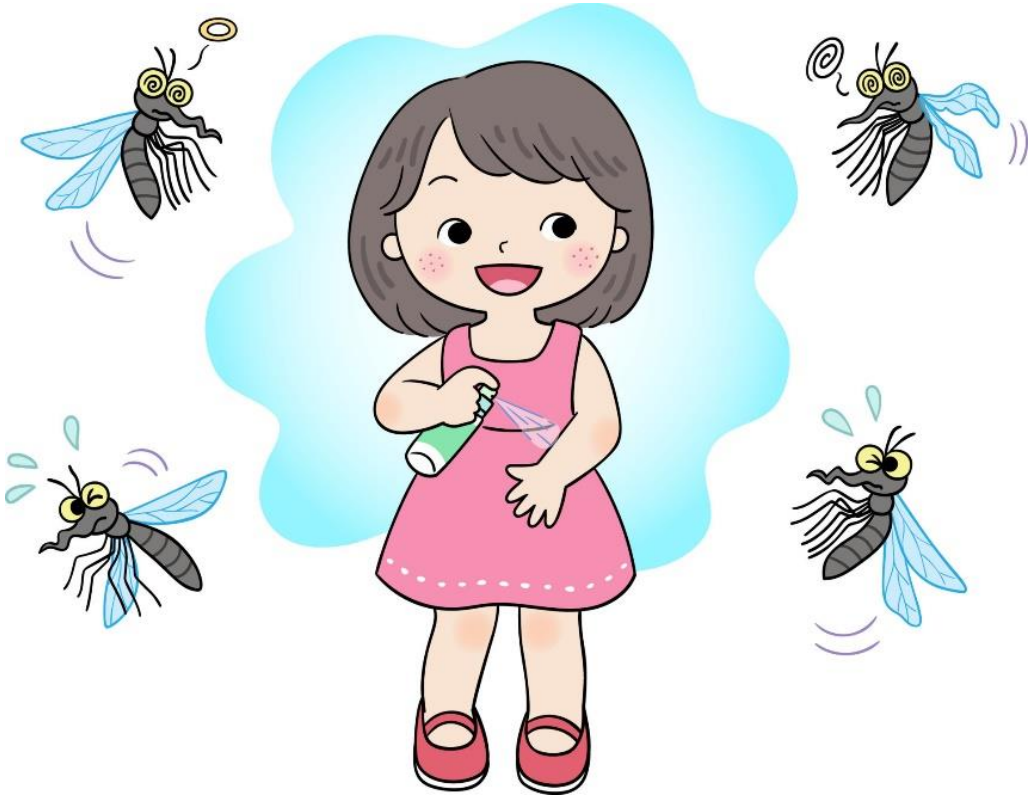

सना सुहानी

सना सुहानी, बडी सयानी,

इक छोटी सी लड़की है।

अपने काम वो खुद करती,

और नहीं किसी से डरती है।

साईकल पर वो स्कूल को जाए,

खाना घर से ही ले जाए।

देखभाल पौधों की करती,

प्रर्यावरण की रक्षा करती।

पशु पक्षियों से उसे है प्यार,

उनको देती नित आहार ।

साथियों को वो दे उपदेश,

बिजली पानी करो न वेस्ट।

फल सब्जी जब लेने जाए,

थैला घर से ही ले जाए।

स्वच्छ वातावरण से उसको प्यार,

पोलीथन का करे बहिष्कार।

होम वर्क वो रोज ही करती,

अध्यापको की वो है चहेती।

अच्छी आदते गर अपनाए,

देश तभी आगे ले जाएं।

गुब्बारे वाला

लड़का वो गुब्बारे वाला,
कितना सुंदर कितना प्यारा।
लाल हरे और नीले पीले,
गुब्बारे उसके रंग रंगीले।
भिखारी नहीं वो मेहनतकश है,
गरीबी पर नहीं किसी का वश है।
दिन में कमाना, रात को पढ़ना,
सब सपनों को पूरा करना।
इन बच्चों की मदद है करना,
हौसला इनका हमें बढ़ाना।
चोर उच्चके न बन जाए,
सामान उनसे लेते जाना।
नहीं जरूरत बांट दो आगे ,
शायद इनके भाग्य भी जागे।
पैन पैंसिल फिर या हो गुब्बारे
इनमें छुपे है सपनों के चांद सितारे।

नानी- दादी

सुना है, हुआ करती थी
कभी बूढ़ी सी इक नानी ।
झक चांदी से बालो वाली,
सुलझी सुघड़ सयानी दादी।
चांद में भी होती इक बुढ़िया,
हरदम कातती चरखा,

दिन में वो आराम थी करती
झलती हाथ से पंखा।
कहां गई वो नानी -दादी,
रस्सियों वाले गावों के झूले।
अब वो सब लगता है सपना
पर मन करता उनको छू ले।
जीन पहन कर घूमे दादी,
प्लाजो पहन के नानी।

लबालब ममता दिल में ,

परियों की सुनाए कहानी।

दादी नानी दिखती सुंदर,

नाती पोतों पर प्यार लुटाती।

संस्कार और शिष्टाचार,

बच्चों को खूब सिखाती।

मधु मक्खिंया

बाग में बच्चे खेल रहे थे,
इक दूजे को छेड़ रहे थे।
पकड़म पकड़ी छुपन छुपाई,
लुकन मीटी रास न आई।
सोनू भाग के बाल ले आया,
सब बच्चों के मन को भाया।
बाल थी आगे, और सब पीछे,
भाग रहे थे आंखे भींचे।

सरवन, अंगद सरपट भागे,
रिनी, मिनी सबसे आगे।
बाल किसी के हाथ न आए,
लुढक लुढक बस भागी जाए।
मोनू की टागें कुछ लंबी,
लपक के सबसे आगे आया।
एक टांग पे उछल के उसने,

बाल को यू छक्का चिपकाया।
बीस फुट फिर उछली बाल,
जा घुसी मधुमक्खियों के जाल।
नींद से मक्खियां जाग पड़ी,
बच्चों के पीछे भाग खड़ी।
बच्चे आगे, मक्खियां पीछे,
भाग रहे सब आंखे मींचे।

मोनू लुढ़का, सोनू पटका,
राज, गोप को लगा था झटका।
मुशकिल से फिर जान बचाई,
सांस में जाकर सांस थी आई।
कानों को फिर हाथ लगाए,
लौट के बुद्धू घर को आए।
सबका ठिकाना इक कोहेनूर,
मधुमक्खियों से रहेगें दूर।

मछलियां

कमरा मेरा अति सुंदर,
उसमें एक है मछलीघर।
रंग बिरंगी मछलियां उसमें,
दिन भर तैरे इधर उधर।
कांच के घर में वो है रहती,
उछल कूद वो दिन भर करती।

सुबह शाम जब खाना मिलता,
खोल कर मुंह को झट से निगलती।
जब भी मैं कमरे में आऊं,
पहले उनके पास मैं जाऊं।
उपर उपर सब आ जाती,
मानों मुझसे हाथ मिलाती।
हल्की हल्की धुन भी सुनाती,
जैसे अपना प्यार जताती।
साफ पानी है उनको भाता,
आक्सीजन से उनका नाता।

एकवेरियम मेरा बना है ऐसे ,

छोटा सा समूंद्र हो जैसे।

कुदरत ने हम सबको बनाया,

विभिन्न रूपों से खूब सजाया।

जीव जंतु भी मीत हमारे,

हम बच्चों को लगते प्यारे।

झूले वाली मुनमुन

छोटी सी इक प्यारी बच्ची
झूला झूल रही थी,
आगे पीछे, आगे पीछे
यूं ही डोल रही थी।
कभी वो हंसती, कभी सहमती
कभी वो डर सी जाती,
हिम्मत करके जोर लगाकर
उपर फिर उठ जाती।

गोल गोल झूले को घुमा कर
रस्सी सा वो बनाती,
झटके से फिर उल्टा करके
जोर से घूम वो जाती।
एक पेड़ थोड़ी दूरी पर
जिसके पते लटके,
छूना चाहे पैर से उसको
दे झूले को झटके।

मना किया ममी ने उसको

पर मुनमुन न मानी,

झूलते झूलते गिरी धड़ाम से

मंहगी पड़ी मनमानी।

मोर

यूं तो पक्षी बहुत से और,
मेरे मन को भाता मोर।
हरा ,नीला ,सुंदर सजीला,
छैल छबीला रंग रंगीला।
मटक मटक कर जब वो चलता,
मेरे मन को खूब वो हरता।
कितने सुंदर पंख है उसके,
चमके सब वो हीरे जैसे।

सिर पर कलगी सजती ऐसे,
मुकुट पहन रखा हो जैसे।
घनघोर घटा जब नभ पर साजे,
हो कर मस्त बारिश में नाचे।
मीठे सुर में बोले बोल ,
मोरनी संग फिर करे कलोल ।
मुरली मनोहर को भी भाए,
तभी तो उसका पंख सजाए
राष्ट्र पक्षी का उसे खिताब
मोर तो पक्षियों का सरताज।

नीली - पीली तितली

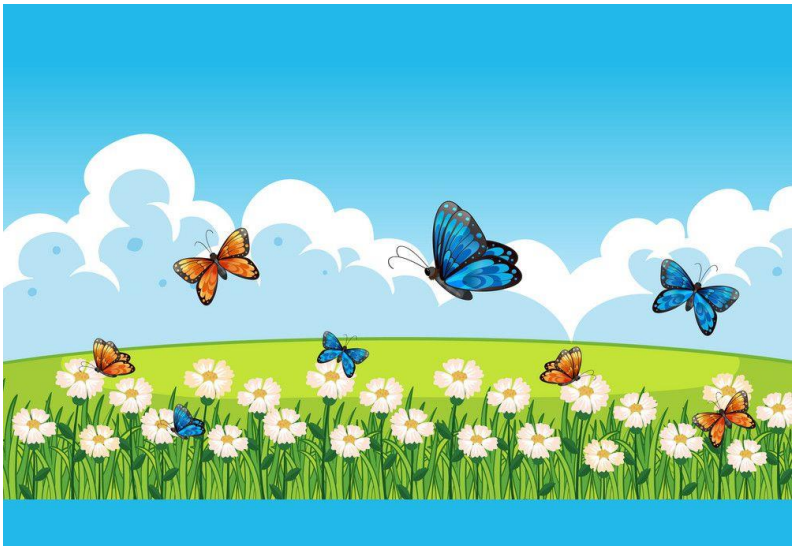

पीली तितली आगे भागे,

नीली उसके पीछे।

भाग भाग जब थक गई दोनों,

फूल पे बैठी आंखे भींचें।

पीली ने जब खोली आंखे,

गुस्सा उसको आया।

ये गुलाब का फूल है मेरा,

हक तूने कैसे जमाया।

और भी कितने फूल बाग में,

यही पे आ तू बैठी।

जल्दी से अब उड़ जा,

वरना कर दूंगी ऐसी तैसी।

सुन कर बात पीली की,

नीली मंद मंद मुस्काई।

हम दोनों तो बहनों सी,

फिर कैसी ये लड़ाई।

तेरा मेरा करने की ,
फितरत नहीं हमारी।
मिल जुल कर सब रहो यहां,
इतनी सी सीख हमारी।
मधुर सुर ये नीली का,
पीली के मन को भाया।
आगे बढकर फिर उसने,
नीली से हाथ मिलाया।

धरती सबकी माता है,
सूरज दे सबको सवेरा।
प्रीत प्रेम ही साथ रहे,
ये दुनिया रैन बसेरा।

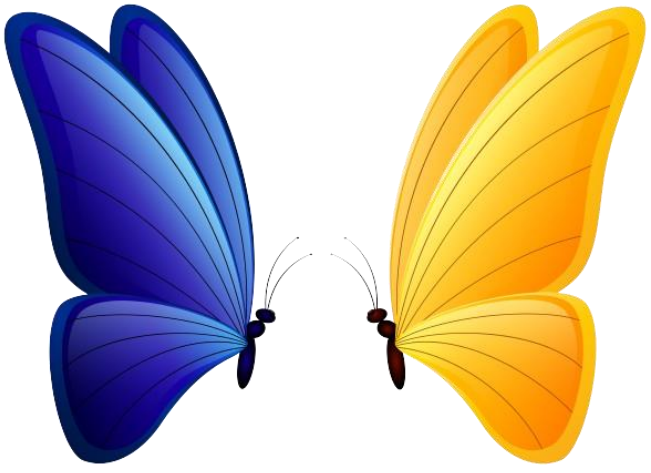

नया जमाना

नानी के घर कौन है जाता,

सब को लंदन पैरिस भाता।

इतनी गर औकात नहीं तो,

शिमला ,उंटी भी चल जाता।

गांव खेत न जाना चाहे,

नकली चीजें ही मन भाए।

सौंधी खुशबू न जाने वो,

'चौखी ढ़ाणी' मन बहलाए।

गुगल पर अब सर्च करेगें,

क्या होती है चाची -ताई।

मौसा, फूफा क्या बला है,

किसको कहते है भरजाई।

नया जमाना अब है आया,

सब को बस मोबाईल भाया।

रिशते , नाते छूट गए सब,

लैपटाप जब हाथ में आया।

मुनिया की फ्राक

कितनी सुंदर फ्राक है मेरी,
रंग बिरंगे मोतियों वाली ।
रंग गुलाबी , झालर नीली ,
हरी लैस की छटा निराली।
छोटे छोटे टंके सितारे,
आकाश में जैसे तारे।
रेशमी धागे जगमग ऐसे,
नभ पर बिजली चमके जैसे।

सिलमा गोटे की ये पट्टी,
मन को मोहे लटकन छोटी।
नन्ही नन्ही बुंदिया भी है,
सुंदर सी ये बैल्ट है मोटी।
सुंदर सी ये हरी कढ़ाई,
मेरे मन को बहुत है भाई।
लाल गुलाबी फूल है ऐसे,
बाग में खिले गुलाब
होजैसे।

मामा लाए फ्राक निराली,

पहन के नाचू मैं मतवाली।

अबके मामा जब भी आना,

प्यारी सी इक फ्राक ही लाना।

बरखा रानी

बरखा रानी, जल्दी आओ,
धरती की तुम प्यास बुझाओ।
छुट्टियां हो गई स्कूलों में ,
हमें खेलना झूलों में ।
सुबह ही सूरज होता गरम,
धूप में कैसे निकले हम।
ऐ.सी पंखें हमें न भाए,
हम तो बाहर खेलना चाहें।
मौनसून तो कब का आया,
तुमने कहां डेरा है लगाया।

घर बैठ कर हुए है तंग,
हमें मचाना है हुड़दंग।
छम छम जब मेघा बरसे,
कशती कागज की भी सरके।
मौसम फिर हो जाए प्यारा,
मोबाईल से करे किनारा।
बरखा रानी, आज ही आना,
आकर फिर जल्दी न जाना।

पानी की प्यास

झमाझम बारिश में
नहा उठे सब पेड पौधे
मिटी से सनी उंची शाखाएं
भी झूम उठी
उनहीं पर तो गिरी थी
बरखा की पहली बूंदे।
मोर भी लगा नाचने
घनघोर घटाए देखकर

चातक ने चोंच खोल ली
प्यास बुझाने की आस में।
बारिश का पानी बह रहा
सड़को पर गलियों में
पर है कुछ उदास सा
कुछ धीमी सी चाल में
वेदना छिपी सी है।

कहां गए वो नन्हे
कागज की नाव वाले
बना कर किशतियां
बहाते थे, बहाव में
कुछ तो नाम भी लिखते
और कोई रखते थे
सिक्के नाव के भीतर

छुपा कर जरा सा नीचे
फिर अगले मोड़ पर
बैठी शरारतों की टोली
करते छीना झपटी
और करते अठखेंलिया
मोबाईल में सब घुसे है
समय नहीं किसी के पास
बह गया बारिश का पानी
अधूरी रह गई पानी की प्यास

आम ही आम

आमों का है मौसम आया
बच्चों का तो मन ललचाया।
यूं तो आम सभी को भाते,
बच्चे खुद को रोक न पाते।
दसहरी, सफेदा, लगड़ा आए,
तोता , कुप्पी सब को भाए।
अलफांजो, चौसा और सिदूंरी,
फल बाजार में लगी है ढ़ेरी।
शेक, जैम की बात निराली,
आईसक्रीम तो सबसे आली।
ममी जब बनाए आचार,
पूरा साल फिर रहे बहार।
कुछ बच्चे करते शैतानी,
करते रहते वो मनमानी।
जहां देखते आम का पेड़,
बैठ कर वहीं लगाते ढ़ेर।
कच्चे पक्के सब खा जाते,

बचे खुचे वो घर ले जाते।
माली उनके पीछे भागे,
पर वो उसके हाथ न आते।
देखो बच्चों, ये मत करना,
चोरी से तुम सदा ही डरना ।
जिस दिन पकड़ में आओगे,
फिर तो बहुत पछताओगे।

गर्मी

ममी , प्लीज न मुझे जगाना,

स्कूल नहीं है मुझको जाना।

गर्मी ने कर दिया बेहाल,

सूरज है गुस्से में लाल।

टप-टप, टप-टप गिरे पसीना,

मुशकिल देखो हुआ है जीना।

पारा हुआ पैंतालीस पार

बाहर निकलना हुआ दुशवार।

कैसे जाऐ बच्चे स्कूल,

छुट्टियां है दो हफ्ते दूर।

खाने में कुछ रास न आए,

निंबू , शरबत ही मन भाए।

पक्षी भी तो तड़फ रहें हैं,

पानी को वो तरस रहे है।

नहरें पोंखर गए है सूख,
कैसे मिटे धरती की भूख।
वन पेड़ सब काट दिए,
पत्थरों के जंगल उगा दिए।
बचा है अब तो यही उपाय,
मिलजुल कर सब पेड़ लगाएं।
सबको लेना एक ही प्रण,
नहीं काटने है अब वन।

चंदा मामा

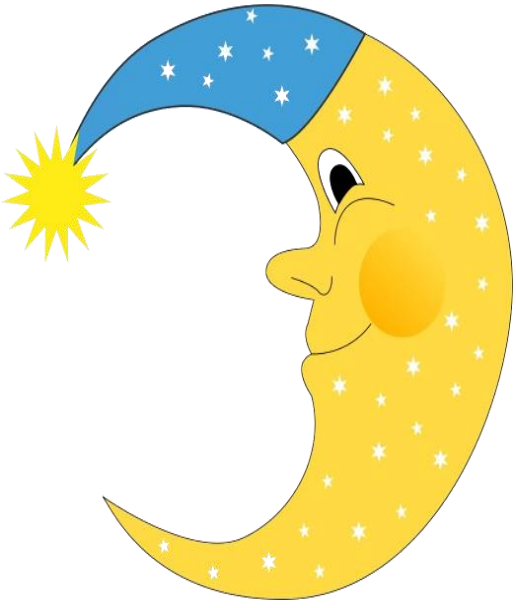

मां मुझको तुम ला दो चंदा
गले में मैं लटकाऊंगा
रेशम की इक डोरी देना
पहन के फिर इतराऊंगा
इतना उंचा क्यूं ये रहता
हाथ में क्यूं नहीं आता है
चमक चमक कर हम बच्चों के
मन को बहुत लुभाता है

कभी ये घटता, कभी ये बढ़ता
कभी तो छुप ही जाता है
आख मिचौली खेल खेल कर
हमको बहुत सताता है
मा और मा से बनता मामा
कुछ तो अकड़ दिखाएगा
थोड़ी सी मनुहार करूं मैं
जल्दी मान भी जाएगा

पूर्णमासी का चंदा मां
ठंडक सी दे जाता है
खिला हुआ सा रूप देखकर
सूरज भी छुप जाता है
इसका घर तो आकाश में
नीचे नहीं ये आएगा

इक तरकीब है मेरे मन में
तब ये रूक नहीं पाएगा
पीतल की तुम परात ले आओ
मैं पानी उसमें भर दूंगा
परछाई देख के चंदा की
खुशी से नाचूं गाऊंगा
मामा मामा प्यारे मामा
दिन में तुम सो जाते हो
रात में जब तुम जग जाते
दुनिया रोशन कर जाते हो

नया साल

दिसंबर गया, जनवरी आया,
उम्मीदें और उल्लास है लाया।
कुछ खोया,कुछ पाया भी,
भूली यादों का सरमाया भी।
दोनों का है एक ही रंग,
दिन भी उतने, उतनी ठंड।
इक आता है, इक जाता है,
अंदाज, पहचान बदल जाता है।

बारह बजते हो गया अंत,
आई फिर से नई बंसत।
आस नई, विशवास नया,
सकंल्पों का आभास नया।
जनवरी फरवरी मार्च आए,
लोहड़ी, होली साथ में लाए।
अप्रैल मई फिर आए जून,
बंसत, गर्मी संग लाए मौनसून।
जुलाई , अगस्त , सिंतबर प्यारा,
आजादी, राखी का अजब नजारा।

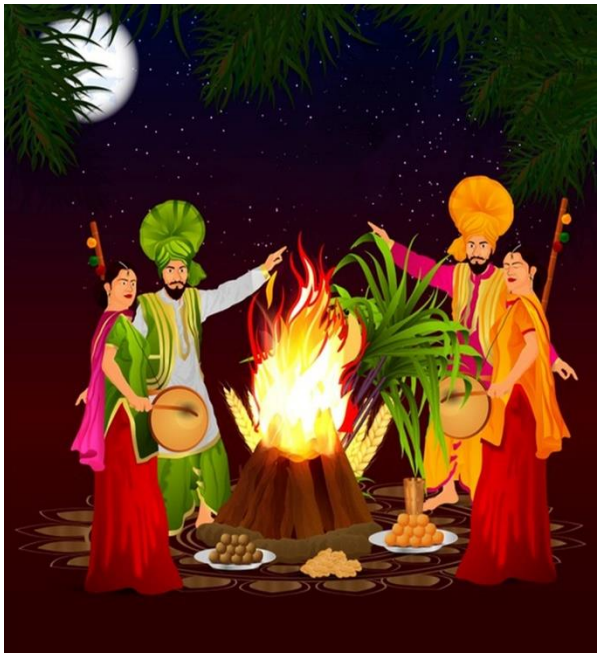

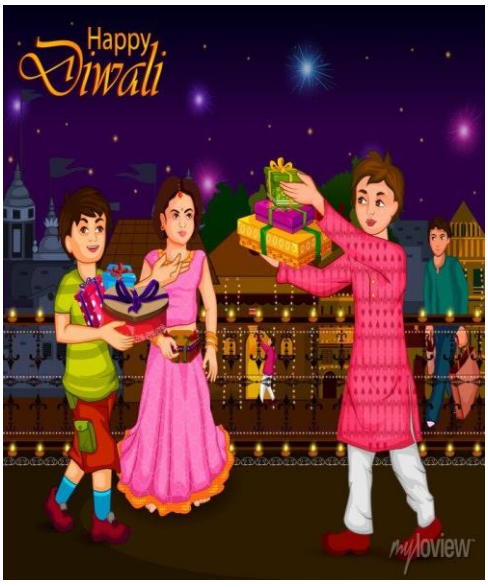

अक्तूबर, नंवबर, फिर दिसबंर,
दशहरा, दीवाली झूमे धरती अंबर
दिंसबर,जनवरी है बेमिसाल,
जुदाई को भी बनाए त्यौहार।
दोनों से हमें मिलती सीख,
मिलना, बिछुड़ना , यही है रीत।

अखबार

सुबह सुबह आए अखबार,
खबरों की वो लाए बहार।
अच्छी बुरी वो खबरें लाए,
शहर, देश का हाल सुनाए।
जब तक न आए अखबार,
पापा दादा रहे बेकरार।

अखबार और चाय की चुस्की,
उन्कों लगती बहुत ही मीठी।
अखबार बांटना नहीं आसान,
इसमें लगती बहुत ही जान।
सरदी गरमी या बरसात,
अखबार निभाती हरदिन साथ।

अखबार वाले भैया भी कमाल,
निशाना उनका है बेमिसाल।
ठक ठक ,ठक ठक ,फेकंते जाते,
उपरी मंजिल तक पहुंचाते।
युग कितना डिजिटल आ जाए,
अखबार की जगह न वो ले पाए

दादा- दादी

दूर गांव में रहती थी
मेरी प्यारी दादी,
आज भी उसकी याद में
आंख मेरी भर आती।
हर साल छुट्टियों में हम
दादी से मिलने जाते,
दूध दही और घर का मक्खन
जी भर भर कर खाते।
सुबह सुबह ही उठ कर दादी
घर के काम निबटाती,
सर पर रख कर मटका वो
कुएं से पानी लाती।
बिजली नहीं थी गांव में मेरे
दादी सांझ में ही खाना पकाती,
चूल्हे की रोटी की खुशबू
सब बच्चों को भाती।

टीवी टैब नहीं होते थे
मोबाईल का ना झंझट,
दादा के संग खेत को जाते
बैल चलाते रहट।
सारा गांव ही अपना लगता
भाते रिशते के भी दादू दादी,

खाने की खुशबू जहां आती
चौकड़ी वहीं जम जाती।
एक नहर थी गांव में मेरे
छुप कर वहां नहाते,
दादी से छुप कर रहते
पर दादा साथ में जाते।
प्रभु धाम वो चले गए
अनमोल छोड़ गए यादें।
उन जैसा फिर प्यार मिला ना
की लाखों फरियादें।

ठंड

ठुर ठुर करती आई ठंड,

सरदी से अब होगी जंग।

सिर से पांव तक ढक कर रहना,

धुंध का कहर भी पड़ेगा सहना।

शीतल शीतल चले लहर,

गरम कपड़ो का मचा कहर।

जाकिट, मफलर, टोपी , शाल,

दस्ताने, मौजे , लगे कमाल।

रजाई, कंबलों की आई बहार,

सजा है इनसे अब बाजार।

मूंगफली,रेवड़ी, गचक भी आई,

लौहड़ी को भी साथ में लाई।

चाय, कोफी पी लो सूप,

देखने को न मिलेगी धूप।

ठंड में कोई कैसे नहाए,

पानी देख कर गश आ जाए।

पंजीरी, पिन्नी और गजरेला,

खाने का तो लगा है मेला।

काम सभी हमें करते रहना,

ठंड से हमको बच कर रहना।

मदारी

आया मदारी , आया मदारी,
बंदर बंदरिया लाया मदारी।
सोनू मोनू जल्दी जाओ,
शीना नीना को भी बुलाओ।
लंहगा पहन के नाचे बंदरिया,
रूठ रूठ कर मांगे पैंजनिया।
बंदर लेकर आया हार,
पहनाने को वो बेकरार।

मगर बंदरिया भागती जाए,
बंदर के वो हाथ न आए।
बंदर अपनी अकड़ दिखाए,
घुमा घुमा कर हार दिखाए।
बंदरिया ने फिर बैग उठाया,
मायके जाने का रौब दिखाया।
बंदर की अब अटकी जान,
घबरा कर तब पकड़े कान।

बंदरिया ने जब मटकाई बाली,

खुश हो बच्चों ने बजाई ताली।

फिर बंदर ने हाथ फैलाए,

बच्चे घर से पैसे लाए।

मदारी भैया जल्दी आना,

अच्छा सा कोई खेल भी लाना।

चूड़ीवाला

गली में आया चूड़ी वाला,
मुन्नी का तो मन ललचाया।
नीली, पीली, हरी, उनाबी,
सबसे सुदंर लगे गुलाबी।
सफेद , जामुनी, संतरी धानी,
एक से बढ़ कर एक सुहानी।
चमक रही हर चूड़ी ऐसे,
सूरज की किरणें हो जैसे।

मीरा, नीरा , सब आ जाओ,
अपने अपने पैसे लाओ।
भाग के मुन्नी घर हो आई,
ममी को भी साथ में लाई।
हाथ लगाए कभी लाल को,
छूकर देखे फिर वो पीली।
मोरपंखी भी भाए मन को,
लगे बादल सी हल्की नीली।

मुन्नी के फिर मन मे आया,

कई रंगों का सैट बनवाया।

खुशी खुशी वो घर को आई,

इद्रंधनुषी सी लगे कलाई।

कांच की चूड़ी भले हो कच्ची ,

उसकी खनक में प्रीत है सच्ची।

कांय-कायं कौआ

कालू कौआ बड़ा शैतान,
मगर वो रहता था परेशान।
सब पक्षी थे उसे सताते,
कालू कह कर उसे चिढ़ाते।
काश न होता गर वो काला,
रंग होता कोई और निराला।

रब का उसने दर्शन पाया,
कुछ मांगो ,वरदान ये पाया।
भाग कर गया हंस के पास,
लेकिन वो भी लगा उदास।
बिना रंग के जीना कैसा,
बेंरग रूई के फाहे जैसा।

तोता कितना सुंदर लगता,
पिंजरे में वो बंद था बैठा।
काला पीला रंग हो जैसा,
बिन आजादी जीवन कैसा।

कालू को न सूझे ठोर,

याद उसे फिर आया मोर।

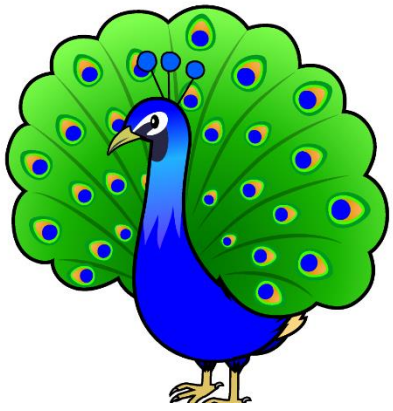

मोर ने अपने पास बिठाया,

दुःखड़ा अपना उसे सुनाया।

डरता मैं बाहर न आता,

अपने पंखों को मैं छुपाता।

सब को मेरे पंख ही भाते,

हरदम मानव मुझे रूलाते।

श्राद्धों में सब तुम्हें बुलाते,

नाना व्यंजन खूब खिलाते।

जिस मुंडेर पर जा तुम बैठो,

अतिथि आगमन की खुशी सुनाते।

भागा कालू रब के पास,

सिर झुका की यूं अरदास।

भगवन मेरा रंग ही अच्छा,

वर दो रहूं मैं दिल का सच्चा।

मुझे रहे न किसी से वैर,

मांगू सदा मैं सब की खैर।

तिरंगा

हर घर हम तिंरगा लहराए,
आजादी अमृतमहोत्सव मनाएं।
सुंदर, प्यारा , न्यारा तिंरगा ,
गौरव, मान बढाए सबका
झुक जाए सिर अदब नमन से
उंचा जब लहराए तिरंगा।
समृद्धि , शांति भारतीय गहना,
प्रगतिशील है हमको रहना।

जांबाज सैनिक प्रहरी सीमा पर,
प्रहार दुशमन का नहीं है सहना।
मिली आजादी बलिदानों से,
रणबांकुरों ने जान गवाई है।
पावन मातृभूमि भारत की,
शहीदी, शहादतों से पाई है।
शहीदों ने रंगा बंसती चोला,
सिर पर कफन था बांध लिया।

चूम लिया फांसी का फंदा,
तिंरगे का मान बढ़ा दिया ।
न कोई मरे भूख से अब ,
बेबसी,गरीबी न लाचारी हो।
सुरक्षित रहे नारी की अस्मत,
अनपढ़ता, न बेरोजगारी हो।
जात- पात मजहब न कोई,
सिरफ और सिरफ इन्सान है।
सहज सरल जीवन हो सबका,
यही तो ख्वाबों का हिंदुस्तान है।